''राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए ''कंठस्थ (मेमोरी आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर) तथा हिंदी ई–टूल्स'' पर तकनीकी कार्यशाला





भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए **29 मई, 2024 (बुधवार)** को संस्थान में ''कंठस्थ (मेमोरी आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर) तथा हिंदी ई–टूल्स'' पर तकनीकी कार्यशाला का आयोजन कम्प्यूटर लैब (LHC) में किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के नोडल अधिकारियों, स्टाफ सदस्यों एवं प्रशासनिक अधिकारियों सहित लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का प्रारम्भ करते हुए श्रीमती इन्द्रमणि ने कार्यशाला के अध्यक्ष, प्रो. अंबुज सागर (उप निदेशक, नीति एवं योजना), कुलसचिव श्री अतुल व्यास, डॉ. नीरज चौरसिया, अध्यक्ष (हिन्दी कक्ष), अतिथि वक्ता श्री केवल कृष्ण तथा कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया।

डॉ. नीरज चौरसिया अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष ने कार्यशाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्थान का हिन्दी कक्ष इस तरह की कार्यशालाएं निरंतर करता रहता है। आज की इस कार्यशाला का उद्देश्य स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करना है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में हिन्दी में कार्य करने के लिए कई सारे ई–टूल्स एवं सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। इनके प्रयोग ने आज हिन्दी में कार्य करना और भी आसान कर दिया है। इस कार्यशाला में आज हम कंठस्थ (2.0) (मेमोरी आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर) के साथ–साथ कई अन्य ई–टूल्स के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे तथा उनको कंप्यूटर पर इंस्टाल करके व कार्य करके देखेंगे। आज की कार्यशाला में आप हिंदी में कार्य करने में आ रही अपनी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे तथा कुछ नया भी सीख सकेंगे। आपने अतिथि वक्ता का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि श्री केवल कृष्ण, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (NIC) दिल्ली से वरिष्ठ तकनीकी निदेशक के पद पर लंबे समय तक कार्यरत रहे। आपको भाषाई मानकीकरण तथा भाषाई तकनीकी के क्षेत्र में एक लंबा अनुभव है। भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन में आपका विशेष योगदान रहा।

श्री अतुल व्यास, कुलसचिव ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है यह हमें देश की मिट्टी से जोड़ती है। आपने कहा कि आज के समय में अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना पहले से आसान हो गया है, हमें केवल प्रयास करने की आवश्यकता है। आज की कार्यशाला का यही उद्देश्य है कि हम कैसे आसानी से हिन्दी में टाइपिंग तथा अनुवाद करें। प्रयास हमें स्वयं ही करना है। मुझे आशा है कि आज की इस कार्यशाला से आपको काफी कुछ सीखने को मिलेगा। उन्होंने कहा कि कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान को अपने कार्यालयीन कार्य में अवश्य प्रयोग में लायें तभी कार्यशालाओं का उद्देश्य सार्थक होगा।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं उप निदेशक (नीति एवं योजना) प्रो. अंबुज सागर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिन्दी कक्ष निरंतर इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन करता है। निश्चित रूप से कार्यशालाएं सभी प्रतिभागियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है और संस्थान के हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में सहायक होती है। आज हमारे बीच श्री केवल कृष्ण हैं जिनका इस क्षेत्र में एक लंबा अनुभव है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी निश्चित रूप से उनके अनुभव का लाभ उठाएंगे तथा जो आज सीख कर जाएंगे उसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में प्रयोग लाएंगे। डॉ. नीरज चौरसिया (अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष) ने कहा है कि मुझे विश्वास है कि प्रो. सागर तथा श्री अतुल व्यास जी के प्रभावी शब्द कहीं न कहीं जरूर अपनी छाप छोड़ेंगे।

विभिन्न ई–टूल्स पर व्यापक चर्चा करते हुए श्री केवल कृष्ण जी ने कंठस्थ–2 (अनुवाद सॉफ्टवेयर) पर जानकारी प्रदान की तथा प्रतिभागियों ने इसका प्रैक्टिकल करके देखा। आपने यूनिकोड तथा गूगल वॉयस टाइपिंग, फोनेटिक एवं रेमिंग्टन टाइपिंग, कंठस्थ भाषिनी तथा राजभाषा विभाग द्वारा विकसित विभिन्न ई–टूल्स की जानकारी प्रदान की तथा प्रतिभागियों की समस्याओं को दूर कर तकनीकी पहलुओं पर प्रकाश डाला।

अन्त में डॉ. नीरज चौरसिया ने अतिथि वक्ता को धन्यवाद देते हुए कहा कि आज सभी को बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को सभी प्रतिभागी अपने अन्य साथियों के साथ साझा करेंगे तथा इस ज्ञान को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में प्रयोग में लाकर संस्थान में राजभाषा हिन्दी के कार्य को करने में भागीदारी करेंगे।